Dr Tapati Mukherjee
H.O.D in Music
Associate Prof.
R. M. College.

B. A Part 2H Paper 3rd Theory + Pract.
Music Part 2

राग-बसन्त

राग परिचय —

"दो मध्यम कोमल रिखब
चढ़त न पंचम कीन्ह
समवादी संवादितै
यह बसंत कह दीन्ह"

राग बसन्त पूर्वी थाट से उत्पत्ति मानी गई है, इस राग के दो प्रकार प्रचलित है। प्रथम प्रकार में दोनो मध्यम तथा धैवत तीव्र स्वर प्रयोग करते हुए पंचम स्वर को वर्जित करते है। तथा दूसरे प्रकार में सम्पूर्ण माना जाता है। प्रचार में इस राग के आरोह मे रिषभ (रे) तथा पंचम (प) स्वर को वर्जित करते हुए अवरोह मे सात स्वर का प्रयोग किया जाता है अतः इसकी जाति औड़व-सम्पूर्ण माना जाता है। इसकी वादी स्वर तार षड्ज (सां) तथा सम्वादी पंचम (प) है। इस राग का गायन समय रात्रि का अंतिम प्रहर है।

विशेषता —

① यह राग उत्तरांग प्रधान राग है। इस राग का विस्तार मध्य सप्तक के उत्तरांग तथा तार सप्तक मे होती है, तार सप्तक मे विस्तार मधुर लगता है,

② इस राग का गायन समय रात्रि का अंतिम प्रहर है लेकिन बसन्त ऋतु मे किसी भी समय गाया जाता है। अतः इसे मौसमी राग कहते हैं। इसके अधिकतर बंदिशो मे बसन्त ऋतु का वर्णन रहता है।

(3) 'शुद्ध मध्यम' स्वर का प्रयोग आरोह में इस प्रकार [struck out] किया जाता है जैसे— सा म, म ग, मंधसां। आरोह में किसी-किसी समय ललित राग का अल्प आभास आता है। तीव्र मध्यम स्वर का प्रयोग आरोह तथा अवरोह दोनों में होता है।

(4) आरोह में मध्य सप्तक से तार सप्तक की ओर जाते समय संगीतज्ञों के कोमल रिषभ का प्रयोग करते हैं तार सप्तक में जैसे मंधरें सां।

(5) ललित राग से बचाने के लिए आरोह में पंचम स्वर को वर्जित करते हुए मंधसां, 'प' स्वर का प्रयोग करते हैं।
मंधरें सां स्वर समूह का प्रयोग
न्यास के स्वर — ग, प, और सां
सम प्रकृति राग — पूरिया धनाश्री ; पूर्वी परज।

आरोह — सा ग, मं ध रें सां
अवरोह — रें नि ध प, मं ग, मं ग, मंधमंग रेसा
पकड़ — मंध रेंसा, रें निधप मंग मंग,

आलाप — साऽऽ नि साऽ, ग मंध, प, मंग मंग रेसा, गमंध मंध रें सां, मंग मंध सांनिध रें निधऽ प मंग मंध प मंग मंग रेऽ सा

तान स्वलाव

8 मात्रा — फगवा - - - - - स्वर
(1) मंधं पप धप मंग | मंग रेसा धाग
(2) साग साम गम गध मंग रेसा धाग

फग - - - - - - - - - धालोरेड.

16 मात्रा. (3) साऽ साग रेसा गऽ | गमं धप मंऽमंध पमं धंऽ मंधप सांनि | धप मंग रेसा

(५) सासा गगा सागा मंमं गग मंमं धमं धप
मंध सांसां रेंनि धप धप मंप मंग रेसा

अन्तरा का ताल - 0 से.

आऽ ब्यवहारमा

(1) मंध सांसं धसां मंध रेंसा निध मंध साऽ
(2) सारें निध पध मंप मग मंग मध रेंसां

आऽ — — — — फूले

(3) निसां सांनि सांसां निसां धनि निध निनि धनि
मंध धम धध मध ऽसां मधऽसं ऽसां
(4) सागं मंगं रेंसा निसां धसां निध पधमंप
धप मंधधसा धप | मंधसां धप मध